श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com


श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.


श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.


श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.


श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

अक्टूबर - चतुर्थ, अंक - 32 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

आनन्द की चाह

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.



हमारे जीवन में कमी केवल आनन्द की है। सारा संसार आनन्द चाहता है। सुख चाहता है। आनन्द जीवन है और दुख मरण। जीवन सब चाहते हैं। मरना कोई नहीं चाहता। आप से ही पूछ लूं कि है कोई व्यक्ति आपमें जो मरना चाहता हो? आपमें ही क्या सारे संसार में ऐसा व्यक्ति आपको ढूंढ़े से भी नहीं मिलेगा। यही कारण है कि संसार के सब लोग अपने जीवन के लिए, जीवन का आनन्द प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के साधन जुटाते हैं। वैसे तो सभी धर्म इस बात पर बल देते हैं कि धर्म करने से जीवन सुखी होता है। यहां आप से एक बात और कह दूं कि आज जितने भी संप्रदाय प्रचलित हैं, आप लोग उन्हें और उनके शास्त्रों को धर्म मान बैठे हैं।

वास्तविक स्थिति यह है कि वे धर्म नहीं हैं, उन्हें आप धर्म के शरीर कह सकते हैं। जिस प्रकार हमारा शरीर अनेक बार बनता है, अनेक बार मिटते है ठीक उसी प्रकार ये सम्प्रदाय भी अनेक बार जन्म लेते हैं, बनते हैं और बिगड़ते रहते हैं। अच्छी तरह समझ लीजिए, जिसका जन्म है उसकी मृत्यु अवश्य है। धर्म का कभी जन्म नहीं होता इसलिए उसे अजन्मा कहा गया है। जो अजन्मा है, उसकी मृत्यु कैसी?

धर्म की मृत्यु कभी नहीं होती। एक दिन एक सज्जन मेरे पास आए और बोले कि अमुक वनस्पति छुड़वा दीजिए। मैंने पूछा, छुड़वाने से क्या होगा। बोले, सभी साधु तो छुड़वाते हैं, कोई हिंसा छुड़वाता है, कोई झूठ छुड़वाता है, कोई चोरी छुड़वाता है। यही तो धर्म है। किन्तु मेरे विश्वास के अनुसार वह व्यक्ति ठीक नहीं कर रहा है। छोड़ना और ग्रहण करना यह तो जीवन की अनादिकालीन परंपरा रही है। किसी वस्तु को छोड़ना मात्र धर्म नहीं है। उस छोड़ने के द्वारा जो उपलब्धि होती है, प्राप्ति होती है, वह धर्म है। आपने अज्ञान को छोड़ा तो आपको ज्ञान प्राप्त हुआ। अज्ञान हेय है, त्याज्य है, क्या आप धर्म को भी हेय और त्याज्य मानेंगे?

धर्म की उपादेयता को सभी शास्त्रों ने स्वीकार किया है। धर्म का हमारे जीवन के साथ अटूट सम्बन्ध है। तनिक यहां धर्म की परिभाषा भी कर ली जाए तो उपयुक्त ही रहेगा। उस दिन एक प्राचीन कवि कह रहे थे-

धर्म धर्म सब कोई कहे, धर्म न जाने कोय।
जात न जाने जीव की तो धर्म कहां से होय।।



दीप से आत्मदीप तक : महावीर निर्वाण की मंगल प्रेरणा

अध्यक्षीय

अमृत महोत्सव : धर्म, संस्कार और संगठनात्मक जागरण का संकल्प

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष E-mail : ajvk1973@gmail.com

दीपावली भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है। जैन परंपरा में इसका विशेष आध्यात्मिक महत्त्व है, क्योंकि यह पर्व तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक की पावन स्मृति से जुड़ा है। भगवान महावीर के निर्वाण के साथ ज्ञानज्योति के प्रसार का जो संदेश जुड़ा है, वह हमें बाहरी प्रकाश के साथ अंतर्मन को भी प्रकाशित करने की प्रेरणा देता है। दीपावली का वास्तविक अर्थ तभी सार्थक होता है, जब हमारे जीवन में अज्ञान के स्थान पर ज्ञान, द्वेष के स्थान पर मैत्री, आसक्ति के स्थान पर अपरिग्रह और अहंकार के स्थान पर विनम्रता का प्रकाश प्रज्वलित हो।

जैन दर्शन हमें सिखाता है कि आत्मकल्याण का मार्ग सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र से होकर गुजरता है। भगवान महावीर का अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह और आत्मसंयम का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था। वर्तमान युग की चुनौतियों के बीच इन सिद्धांतों को जीवन में अपनाना और नई पीढ़ी तक पहुँचाना हम सभी का सामूहिक दायित्व है।

इसी संदर्भ में अमृत महोत्सव का आयोजन विशेष महत्त्व रखता है। यह केवल एक समारोह नहीं, बल्कि हमारी धार्मिक विरासत, आध्यात्मिक चेतना और संगठनात्मक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने का महत्त्वपूर्ण अवसर है। इसके माध्यम से हम अपनी परंपराओं का गौरव स्मरण करते हुए समाज को धर्म, संस्कार, सेवा और सद्भाव के सूत्र में जोड़ सकते हैं। अमृत महोत्सव हमें यह भी प्रेरणा देता है कि धार्मिक आयोजनों की सफलता केवल उनकी भव्यता से नहीं, बल्कि उनसे उत्पन्न होने वाली स्थायी सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना से आँकी जानी चाहिए।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस सदैव जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार, समाज की एकता, धार्मिक संस्कारों के संरक्षण और सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए संकल्पबद्ध रही है। अमृत महोत्सव इसी संकल्प को व्यापक स्वरूप देने का अवसर है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस आयोजन के माध्यम से युवाओं में धर्म के प्रति अनुराग बढ़े, परिवारों में संस्कारों की जड़ें मजबूत हों तथा समाज में सहयोग, समन्वय और सेवा की भावना विकसित हो।

दीपावली हमें आत्मावलोकन का अवसर भी प्रदान करती है। जिस प्रकार हम अपने घरों को स्वच्छ और प्रकाशमान बनाते हैं, उसी प्रकार अपने विचारों, व्यवहार और अंतःकरण को भी निर्मल बनाने का संकल्प लें। क्षमा, करुणा, मैत्री और संयम को जीवन का आधार बनाएँ।

(शेष पृष्ठ 4 में)

हम अहिंसक हैं, असहाय नहीं!

सम्पादकीय

शास्त्रों में श्रद्धा, अहिंसा में आस्था और आत्मरक्षा में सजगता है, जैन समाज की असली पहचान!

दशहरे पर शस्त्र-पूजन से उठे सवालों के बीच आत्मसम्मान, सामाजिक अस्मिता और इतिहास के पुनर्पाठ की आवश्यकता!

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री



जैन परंपरा में शास्त्र और शस्त्र, दोनों की अपनी मर्यादा है। हमारा समाज प्राचीन आगमों, शास्त्रों और भगवान महावीर की अहिंसा-वाणी के प्रति श्रद्धा रखता है। साथ ही, अपनी पारिवारिक परंपराओं और सुरक्षा के प्रति सजग रहना भी जानता है। इन दोनों को परस्पर विरोधी मानना उचित नहीं है।

जैन धर्म में साधु और श्रावक की जीवनचर्या तथा व्रतों की मर्यादाएँ अलग-अलग हैं। साधु-साध्वियाँ महाव्रतों का कठोरता से पालन करते हुए अहिंसा को सर्वोच्च स्थान देते हैं, जबकि श्रावक गृहस्थ जीवन में रहते हुए अणुव्रतों का पालन करते हैं और परिवार तथा समाज के प्रति अपने दायित्व निभाते हैं। गृहस्थ जीवन की परिस्थितियों में अहिंसा, संयम और उत्तरदायित्व के बीच विवेकपूर्ण संतुलन है। आत्मरक्षा और परिवार की सुरक्षा के प्रश्न पर भी कानून, आवश्यकता और नैतिक मर्यादा का ध्यान रखना आवश्यक है। इसी दृष्टि से विजयादशमी पर शस्त्र-पूजन की पारिवारिक परंपरा को समझना चाहिए।

इस वर्ष दशहरे पर मैंने अपने परिवार के खानदानी अस्त्र-शस्त्रों, बंदूकों, राइफलों और पिस्तौल इत्यादि का पूजन किया। इस अवसर की तस्वीर सोशल नेटवर्किंग साइट पर साझा की तो उस पर व्यापक चर्चा हुई। कुछ लोगों ने प्रश्न उठाया कि अहिंसा के अनुयायी होने के नाते मेरा शस्त्र-पूजन करना कितना उचित है?

मैं ऐसे प्रश्नों का स्वागत करता हूँ, लेकिन एक प्रश्न उन लोगों से भी है, क्या अहिंसा का अर्थ आत्मसमर्पण है? क्या शांतिप्रिय होने का अर्थ असहाय होना है? और क्या अपने परिवार की सुरक्षा के प्रति सजग रहना किसी धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध है?

यह गौरव की बात है कि लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन भारतीय सेना के उपसेना प्रमुख के पद पर कार्यरत हैं। उनका एवं उन जैसे भारतीय सेना में कार्यरत जैन ऑफिसर्स का उदाहरण बताता है कि जैन समाज से जुड़ी पहचान और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए समर्पित सैन्य सेवा परस्पर विरोधी नहीं हैं। जैन समाज और व्यापक व्यापारी वर्ग के लिए यह गर्व का विषय है कि उसके सदस्य विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण दायित्व निभा रहे हैं।

भारतीय इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि व्यापारी और जैन समुदाय से जुड़े व्यक्तियों का योगदान केवल व्यापार, दान और धार्मिक संस्थाओं तक सीमित नहीं रहा। (शेष पृष्ठ 3 में)



M.J. Home Furnishing
Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet
Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric
Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal
Mob: 8053018933, 8727890101
E-mail: mjhome025@gmail.com
Vijay Jain
Chairman - Viswast Mandal, Jain Conference, New Delhi



श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद
युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.
उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'
प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री कोमलमुनि जी म.सा.
मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)
सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'
प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष :	श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री :	प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष :	श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष :	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल
चेयरमैन : श्री विजय जैन - पानीपत
वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन - मुंबई
समन्वयक : श्री जसवंत जैन - दिल्ली
सदस्यगण : डॉ. अमित राय जैन - बड़ौत, डॉ. अनामिका तलेसरा जैन - सूरत, श्री आनंदमल छल्लानी जैन - चेन्नई, श्री अंकुर जैन - दिल्ली, श्री अशोक रांका जैन - बेंगलुरु, श्री अतुल जैन - दिल्ली, श्री अविनाश चोरड़िया जैन - नई दिल्ली, श्री जे. डी. जैन - गाजियाबाद, श्री जयंती कुकड़ा जैन - सूरत, श्री कांति कुमार लोढ़ा जैन - औरंगाबाद, श्री कंवरलाल सूर्या जैन - भीलवाड़ा, श्री महावीर रांका जैन - चेन्नई, श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - दिल्ली, श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन - पाली, श्री पारस मोदी जैन - मुंबई, श्री प्रशांत जैन - दिल्ली, श्री रमेश भंडारी जैन - इंदौर, श्री रविन्द्रनाथ जैन - दिल्ली, श्री संजीव हीरालाल जैन - लुधियाना, श्रीमती संतोष जैन - दिल्ली, श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन - मालेगांव, श्री सुदर्शन जैन - दिल्ली, श्री विलास राठौर जैन - पुणे, श्री विनय जैन - पानीपत, श्री विनोद कीमती - हैदराबाद, श्री विपुल जैन - दिल्ली

आनंद आशा आस्था का पर्व दीपावली

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.



दीपावली पर्व यह खुशियों का प्रकाश का समृद्धि का स्नेह का समादर का, विश्वास का, आशा का तथा आस्था ऋद्धा का पर्व है। छोटे बच्चे से लेकर वृद्धपर्यंत गरीब से लेकर अमीरतक अनपढ़ में लेकर साहित्यिक एवं सुशिक्षित तक सभी को दीपावली पर्व प्रसन्नता से भर देता है। हर एक व्यक्ति अपनी प्रसन्नता एक दूसरे के साथ बांटता है। वास्तविक खुशी बांटने में ही है मात्र बटोरने में नहीं, परस्पर को आदान प्रदान में ही है, यह गहराई के साथ अनुभव कराने वाला यह आहल्लाद आनंद और उत्साह से भरा दीपावली पर्व है।

यह पर्व वातावरण में व्याप्त अंधकार को रोशनाई से दूर करके प्रकाश से भर देने वाला पर्व है। अंधकार मानव को भयभीत कर देता है, अनेक प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों को, दुष्ट वृत्तियों को तथा नकारात्मक शक्ति को बढ़ावा देकर आसुरीवृत्ति का पोषक बनता है। इससे विपरीत प्रकाश निर्भयता, सत्प्रवृत्ति, सात्विकता तथा सकारात्मक शक्ति को प्रेरित करके दैवी वृत्ति का पोषण करता है।

दीपावली लक्ष्मी पूजन का पर्व कहा जाता है। लक्ष्मी यह समृद्धि की देवी कही गई है। लक्ष्मी का पूजन याने समृद्धि की आमंत्रण। अपनी बुद्धि क्षमता तथा पुरुषार्थ के द्वारा किये गये प्रयासों को सफलता मिले यही भावना प्रत्येक के अन्तर में होती है। प्रामाणिकता दूरदर्शिता तथा अथक मेहनत ये वे सद्गुण है जो समृद्धि को प्राप्ति कराते हैं। इन सद्गुणों को धारण करना ही वास्तव में लक्ष्मी पूजन है।

दीपावली पर्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता है सम्पूर्ण परिवार द्वारा एक साथ हिल-मिलकर पर्व को सम्पन्न करना। इस उत्सव की वेला में परिवार के सभी सदस्य परस्पर में मिलते हैं, अपनी खुशियाँ एक दूसरे को बांटते हैं। इन दिनों में परिवार का पारस्परिक तालमेल वृद्धिगत होता है। आज के इस स्पर्धात्मक युग में जब प्रत्येक मनुष्य अपनी आर्थिक प्रगति मजबूती के लिये भाग-दौड कर रहा है, वह अपने स्वजन परिजन के लिये समय ही नहीं दे पा रहा है। ऐसे में यह पर्व एक सुनहरा अवसर उपलब्ध कराता है। सम्पूर्ण परिवार को एक दूसरे के साथ ज्यादा से ज्यादा समय गुजारने का तथा आपस में भावनाओं विचारों के आदान-प्रदान का। इसी माध्यम से विकसित होता है स्नेह एवं समादर।

दीपावली पर्व विश्वास की नींव को मजबूत बनाता है। अनेकों व्यापार व्यवसाय के व्यवहार इस दिन पर पूरे किये जाते हैं। पुराना, वर्षभर का लेन-देन चुकता (पूरा) करके नये व्यवहार का प्रारंभ होता है। कोई भी व्यवहार समय पर पूर्ण हो तो विश्वास सुदृढ़ मजबूत बनता है और बढ़ता जाता है। व्यापार की ही तरह जीवन के हर क्षेत्र में किये हुए हर वादे को यदि समय पर पूरा किया जाये तो विश्वास वृद्धिगत होता है। यदि व्यक्ति स्वयं भी किसी कार्य को समय पर ही पूरा कर लेता है तो वह आत्मविश्वास से लबालब भर जाता है।

दीप यह प्रकाश रोशनी उजाले की सबसे छोटी इकाई है। सूर्य चंद्र जैसी प्राकृतिक प्रचंड प्रकाशपुत और हैलोजन से लेकर बड़े-बड़े बल्ब तक के ऐसे अनेकों माध्यम है जो इस धरती पर दूर-दूर तक प्रकाश फैलाते हैं, बांटते हैं। लेकिन, इन सब से हटकर बढ़कर 'दीप' का महत्व है। जिस समय सूर्य आदि न हो तब भी अपने लघुतम अस्तित्व से अंधकारमय मार्ग में पथ-प्रदर्शन का, तिमिर से घिरे इस जगत को आगे बढ़ाने का हौसला देने वाला यह 'दीप' का प्रकाश है। दीपक मानव को प्रेरित करता है, हे मानव! कितनी ही प्रतिकूल परिस्थिति का अंधेरा हो, सूर्य आदि की तरह कोई गॉडफादर न हो तब भी निराश मत हो, अपने आपको छोटा या एकाकी मत मान। तेरे भीतर का प्रकाश तुझे इस अंधेरे से बाहर निकलने में सहायक मददगार होगा। तू स्वयं दीपक बन तथा आगे बढ़ता चल।

यह पर्व आस्था का श्रद्धा का भी महान पर्व है। जैनों के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर से यह पर्व संबद्ध है। कार्तिक वदी अमावस्या को ही आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व पावापुरी नगरी में प्रभु महावीर का निर्वाण हुआ था। महावीर इसी दिन भौतिक देह को छोड़ सिद्ध-बुद्ध मुक्त निरंजन निराकार बने। प्रभु महावीर ने अपने निर्वाण से पूर्व लगातार तीन दिन तक जो संदेश उपस्थित श्रद्धाशील भक्त समुदाय को प्रदान किया, उसी को 'श्री उत्तराध्ययन सूत्र' के रूप में जैन परंपरा श्रद्धापूर्वक स्मरण-पठन करती है। भगवान महावीर के रूप में विद्यमान ज्ञानसूर्य के अस्तंगत होने के पश्चात उनका संदेश तथा उनके शिष्यगण दीपक की भूमिका निभाते हुये मानवजाति का मार्गदर्शन करते रहेगें, इसी का प्रतीकात्मक रूप है दीपावली पर्व।

उसी प्रकार हिंदू परंपरा में प्रभु रामचंद्र के अयोध्या लौटने पर नगर निवासीजन के द्वारा घर-घर दीप प्रज्वलन से किये गये स्वागत का हर्षोल्लास का प्रतीक है यह दीपावली पर्व।

समग्र जीवन के अनेक मंगलमय पावन भाव भावनाओं को प्रेरित करने वाला यह दीपावली पर्व अधिकाधिक सात्विकता से मनाया जाये, पारंपरिक रूप से मनाया जाये तो यह जन जन के लिये कल्याणकारी बनेगा।

महावीर निर्वाण दीपावली : दीप जलें आत्मज्ञान के, अंधकार मिटे अज्ञान का

- युवा तपस्वी पू. श्री मुक्तेशमुनि म.सा



दीपावली केवल घरों को रोशन करने का पर्व नहीं, बल्कि आत्मा को जागृत करने का महान आध्यात्मिक संदेश है, यह वह पावन दिवस है, जब अहिंसा के अमर उद्घोषक, वीतरागता के शिखर पुरुष, चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने पावापुरी में समस्त कर्म बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष का शाश्वत प्रकाश प्राप्त किया। महावीर का निर्वाण सूर्य का अस्त होना नहीं, बल्कि अनंत आत्मज्योति का प्रकट होना है, उनका निर्वाण मानवता को यह संदेश देता है कि शरीर नश्वर है, किंतु आत्मा अनादि, अनंत और अविनाशी है।

जैन दर्शन हमें सिखाता है कि बाहरी दीपक संसार का अंधकार मिटा सकते हैं, किंतु जीवन का अज्ञान केवल सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र की त्रिवेणी से ही मिट सकता है, आज आवश्यकता केवल दीप जलाने की नहीं, बल्कि हृदय में क्षमा, करुणा, संयम, समता और अपरिग्रह की ज्योति जगाने की है। जिस दिन क्रोध पर क्षमा, लोभ पर संतोष, अहंकार पर विनय और राग-द्वेष पर समता की विजय होगी, उसी दिन हमारी सच्ची दीपावली होगी।

भगवान महावीर ने 'जियो और जीने दो' का अमर संदेश देकर समस्त जीवों के प्रति मैत्री और करुणा का मार्ग दिखाया, उनकी दृष्टि में धर्म केवल पूजा-अर्चना नहीं, बल्कि प्रत्येक जीव के प्रति संवेदनशीलता, आत्मसंयम और शुद्ध आचरण का नाम है। इस निर्वाण महापर्व पर पटाखों की हिंसा नहीं, अहिंसा का प्रकाश फैलाएं। प्रदर्शन नहीं आत्मदर्शन, भोग नहीं त्याग और संग्रह नहीं संतोष को जीवन का आधार बनाएं। घर-घर दीप जलें, पर उससे पहले घट-घट में महावीर के सिद्धांतों का प्रकाश जगे। यही महावीर निर्वाण दिवस की सार्थकता, प्रभु के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और आत्मकल्याण का वास्तविक मार्ग है।


जय गुरु रूप

जय गुरु मरुधर केसरी

जय गुरु सुकन
कोटिशः वंदन नमन

दानवीर सेठ स्व. श्री माणकचंद सा बोहरा

स्व. श्रीमती रूपलताजी बोहरा
HaloVerse Entertainment Pvt. Ltd. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd. Mumbai
नरेश-बबिता, हर्ष-संजना,
सौ.कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन
मुंबई - जोधपुर


नरेश बोहरा जैन
कार्याध्यक्ष : श्री मरुधर केशरी पावनधाम, जैतारण (राजस्थान)
वाईस चेयरमैन - विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
Mo.: 7666540600 E-mail : jainn07@gmail.com

ऐतिहासिक धरोहर की स्वर्णिम यात्रा

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव (2026-27) के अंतर्गत 'राष्ट्रव्यापी कलश यात्रा' का भव्य आयोजन

जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष 2026-27' के अंतर्गत एक अत्यंत गौरवशाली, ऐतिहासिक एवं आस्थावर्धक 'राष्ट्रव्यापी कलश यात्रा' की रूपरेखा तैयार की गई है। संघ, परंपरा और संस्कृति के प्रति जन-जन की अगाध श्रद्धा को एक सूत्र में पिरोने के उद्देश्य से आयोजित की जा रही यह यात्रा जैन समाज के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज होने जा रही है।

आस्था और धर्म का दिव्य संयोजन : एक रथ पर संजोया जाएगा अमृत कलश - इस संपूर्ण राष्ट्रव्यापी यात्रा का मुख्य आकर्षण एक विशेष रूप से सुसज्जित एवं अलंकृत 'अमृत रथ' होगा। इस रथ पर अमृत कलश को सादड़ी में पूर्ण विधि-विधान, मंत्रोच्चार एवं उच्च आध्यात्मिक मर्यादाओं के साथ स्थापित (प्रतिष्ठित) किया जाएगा। यह पवित्र धर्म रथ देश के कोने-कोने में भ्रमण करते हुए श्रावक श्राविकाओं को अध्यात्म और संघनिष्ठा का आलौकिक अनुभव कराएगा।

देश भर के पावन स्थानकों व तीर्थों की पवित्र माटी का समावेश : इस कलश यात्रा का मूल भाव 'एकता, सर्वधर्म-सद्भाव और अगाध आस्था' है। इस ऐतिहासिक यात्रा के दौरान भारतवर्ष के समस्त राज्यों एवं नगरों में स्थित पावन स्थानकों, तथा वंदनीय आध्यात्मिक स्थलों की मिट्टी को अत्यंत आदर एवं श्रद्धा के साथ इस मंगल कलश में समाहित (एकत्रित) किया जाएगा। यह केवल मिट्टी का संग्रह नहीं, बल्कि देश भर के लाखों-करोड़ों स्थानकवासी जैन श्रावक-श्राविकाओं की अटूट भावना, त्याग, तपस्या और भक्ति का एक दिव्य संगम होगा।

दो माह की सतत् यात्रा : युवा एवं महिला शाखा के कंधों पर ऐतिहासिक जिम्मेदारी - लगभग दो महीने की इस लंबी और निरंतर यात्रा के सुचारू, अनुशासित एवं भव्य संचालन की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी जैन कॉन्फ्रेंस की 'राष्ट्रीय युवा शाखा' एवं 'राष्ट्रीय महिला शाखा' को सौंपी गई है। युवा ऊर्जा का उत्साह और मातृशक्ति की अपार भक्ति व समर्पण मिलकर इस यात्रा को जन-जन तक पहुँचाने में मुख्य भूमिका निभाएंगे। देश के प्रत्येक शहर, गाँव और अंचल में जब यह रथ पहुँचेगा, तब स्थानीय समाज के सहयोग से भव्य अगवानी, प्रवचन, एवं धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

अमृत महोत्सव के मुख्य संयोजक श्री जसवंत जैन ने यात्रा के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा - ''यह राष्ट्रव्यापी कलश यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने वाली सामान्य यात्रा नहीं है, बल्कि यह एक अभूतपूर्व और ऐतिहासिक सांस्कृतिक आयोजन है। इसे आने वाली पीढ़ियाँ हमेशा अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और गर्व की भावना से देखेंगी। श्री जैन कॉन्फ्रेंस एवं श्रमण संघ के उज्ज्वल इतिहास में यह आयोजन गौरव का एक नया कीर्तिमान स्थापित करेगा।''

संघ भावना और संगठन का नया अध्याय : श्रमण संघ के अमृत महोत्सव के इस पावन अवसर पर आयोजित यह यात्रा पूरे देश के जैन समाज को एक सूत्र में बाँधने, नई पीढ़ी में धार्मिक संस्कारों का सिंचन करने और स्थानकवासी परंपरा के मूल्यों को उजागर करने का अनूठा माध्यम बनेगी।

समस्त संघ, समाज व श्रावक वृंद से यह अपील की जाती है कि जब भी यह मंगल कलश यात्रा आपके नगर अथवा क्षेत्र में आगमन करे, तब पूरे उत्साह, अनुशासन और भक्ति-भाव से धर्म रथ का स्वागत करें तथा इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनकर अपने जीवन को धन्य बनाएँ।

श्रमण संघ Vision 2052

स्थानकवासी समाज की भावी दिशा और उज्ज्वल भविष्य का संकल्प

श्रमण संघ की 75 वर्ष की गौरवशाली यात्रा के अवसर पर श्रमण संघीय अमृत महोत्सव का विशाल आयोजन किया जा रहा है। इस ऐतिहासिक आयोजन के अंतर्गत समाज और संघ को एक नई दिशा देने के उद्देश्य से एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं युगोपयोगी प्रकल्प 'श्रमण संघ Vision 2052' का आगाज होने जा रहा है। यह भविष्यमुखी योजना स्थानकवासी जैन समाज और श्रमण संघ के आने वाले दशकों की प्रगति का एक मजबूत खाका (ब्लूप्रिंट) साबित होगी।

'Vision 2052' का मुख्य उद्देश्य और प्रेरणा : "Vision 2052" केवल एक दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह श्रमण संघ की आध्यात्मिक विरासत, संघीय चेतना और भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं के मध्य एक सुदृढ़ सेतु का कार्य करेगा। इसका मुख्य उद्देश्य समाज और संघ को आधुनिक समय की चुनौतियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप नई दिशा प्रदान करना है।

आध्यात्मिक विरासत का संरक्षण : पूज्य गुरु-भगवंतों के पावन मार्गदर्शन और आशीर्वाद से संघ की मूल चेतना को अक्षुण्ण रखना।

भावी पीढ़ियों का विकास : आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शन के लिए आध्यात्मिक और सामाजिक धरातल तैयार करना।

संघीय एकता और संगठन : स्थानकवासी जैन समाज के सभी वर्गों को एक साथ लाकर संगठन को और अधिक मजबूत बनाना।

जैन कॉन्फ्रेंस इस महान प्रकल्प को सफल बनाने के लिए पूर्णतः समर्पित और तत्पर है। पूज्य गुरु-भगवंतों के दिशा-निर्देशन में इस विजन को एक व्यापक एवं भविष्यदर्शी स्वरूप देने के लिए हर संभव सहयोग प्रदान किया जा रहा है, जैसे शोध-सामग्री एवं ऐतिहासिक अभिलेख - आवश्यक ऐतिहासिक दस्तावेजों और शोध-सामग्री का कुशल प्रबंधन।

विशेषज्ञों से समन्वय : विभिन्न क्षेत्रों के विचारकों, प्रबुद्धजनों और विशेषज्ञों से सतत समन्वय।

आधुनिक तकनीक व चिंतन बैठकें : तकनीकी सहायता और विशेष चिंतन बैठकों के आयोजन की समुचित व्यवस्था।

एक नवयुग की शुरुआत समस्त श्रमण संघ के साधु-साध्वियों के पावन मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से यह प्रकल्प पूरे समाज में एक नई ऊर्जा का संचार करेगा। आगामी समय में 'श्रमण संघ Vision 2052' संपूर्ण समाज के समक्ष एक प्रेरणादायक दस्तावेज के रूप में प्रतिष्ठित होगा। समस्त स्थानकवासी जैन समाज को पूर्ण आशा है कि यह आयोजन श्रमण संघ के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित होगा।

श्रमण संघ Vision 2052 स्थानकवासी जैन समाज के सर्वांगीण विकास का दूरदर्शी संकल्प है। इसका उद्देश्य धर्म, संस्कार, संगठन और सेवा को सुदृढ़ करते हुए नई पीढ़ी को समाज से जोड़ना, युवाओं को नेतृत्व के अवसर देना तथा शिक्षा, तकनीक और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करना है। यह विजन परंपराओं के संरक्षण के साथ आधुनिक सोच अपनाकर एक संगठित, जागरूक, सशक्त और आध्यात्मिक समाज के निर्माण की प्रेरणा देता है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') भामाशाह मेवाड़ के महाराणा प्रताप के विश्वस्त मंत्री, कोषाध्यक्ष और सहयोगी थे। मुगल सत्ता के विरुद्ध संघर्ष के कठिन समय में उन्होंने महाराणा प्रताप को आर्थिक सहयोग प्रदान किया। उनका जीवन त्याग, संगठन और संकट में अपने पक्ष के साथ खड़े रहने का प्रेरक उदाहरण है।

इसी प्रकार हेमचंद्र विक्रमादित्य, जिन्हें हेमू के नाम से जाना जाता है, रेवाड़ी क्षेत्र से जुड़े प्रभावशाली प्रशासक और सेनानायक थे। 1556 ई. में वे दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुए, लेकिन उसी वर्ष पानीपत के दूसरे युद्ध में अकबर ने उन्हें धोखे से मार दिया! उनकी सामाजिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि बनिया समुदाय से होना इस धारणा को चुनौती देता है कि व्यापारी पृष्ठभूमि से आने वाले व्यक्ति प्रशासन और सैन्य नेतृत्व में महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा सकते।

अग्रवाल व्यापारी समाज की परंपरा में महाराजा अग्रसेन सामाजिक संगठन, सहयोग और लोककल्याण के प्रेरणास्रोत माने जाते हैं। इन उदाहरणों का उद्देश्य किसी समुदाय को दूसरे से श्रेष्ठ बताना नहीं, बल्कि इतिहास की उस अधूरी व्याख्या को चुनौती देना है जिसमें व्यापारी समाज को केवल धन कमाने वाला और जैन समाज को केवल अहिंसा तक सीमित करके देखा जाता है।

आज आत्ममंथन का विषय यह है कि कहीं लंबे समय से प्रचलित धारणाओं के कारण समाज के कुछ लोग स्वयं को कमजोर या असहाय तो नहीं समझने लगे हैं। यदि ऐसा है, तो इसका उत्तर किसी दूसरे समुदाय के प्रति अविश्वास या वैमनस्य में नहीं, बल्कि अपने इतिहास, सामर्थ्य और अधिकारों को पहचानने में है।

जैन समाज ने शिक्षा, साहित्य, दर्शन, व्यापार, चिकित्सा, जीवदया और लोककल्याण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उसकी वास्तविक शक्ति अहिंसा, ज्ञान, आर्थिक आत्मनिर्भरता, संगठन और सामाजिक सेवा में निहित है। हमें अपनी नई पीढ़ी को यह समझाना होगा कि व्यापार करना कमजोरी नहीं, विनम्र होना विवशता नहीं और अहिंसा का पालन करना असहाय होना नहीं है। जो समाज अपने इतिहास और सामर्थ्य को भूल जाता है, वह दूसरों द्वारा गढ़ी गई अपनी पहचान को सच मानने लगता है। इसलिए जैन समाज और व्यापारी वर्ग को अपने आत्मसम्मान के प्रति सजग रहना चाहिए। हमें सभी समुदायों का सम्मान करना है, लेकिन अन्याय, अपराध और उत्पीड़न के सामने चुप रहने को शांति नहीं मानना है।

आत्मरक्षा के प्रति जागरूकता भी सामाजिक जिम्मेदारी है : जैन सामाजिक संस्थाओं और व्यापारी संगठनों को आत्मरक्षा, आपातकालीन परिस्थितियों में उचित प्रतिक्रिया, महिलाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा, प्राथमिक उपचार और पुलिस-प्रशासन से समन्वय जैसे विषयों पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने चाहिए।

जहाँ कानूनन अनुमति हो, वहाँ अधिकृत विशेषज्ञों के माध्यम से लाइसेंस प्राप्त शस्त्रों के सुरक्षित रखरखाव और कानूनी जिम्मेदारियों के विषय में भी जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। किसी भी शस्त्र का प्रयोग कानून, आवश्यकता और सुरक्षा की निर्धारित मर्यादाओं के अनुरूप ही होना चाहिए। यह आह्वान हर व्यक्ति के लिए हथियार रखना अनिवार्य बनाने का नहीं, बल्कि समाज को जागरूक, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार बनाने का है। समाज की शक्ति केवल शस्त्रों में नहीं, बल्कि शिक्षा, संगठन, साहस, कानूनी जागरूकता और संकट के समय एक-दूसरे के साथ खड़े होने में भी होती है।

अहिंसा हमारी पहचान, आत्मसम्मान हमारा संकल्प : विजयादशमी पर मेरे द्वारा किया गया शस्त्र-पूजन हमारी पारिवारिक परंपरा, आत्मरक्षा के प्रति जागरूकता और उत्तरदायित्व का प्रतीक है। इससे उठी चर्चा को अहिंसा और आत्मरक्षा के संबंध को समझने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए।

हमें भगवान महावीर की अहिंसा को जीवन में उतारना है, सभी धर्मों का सम्मान करना है और सामाजिक सद्भाव बनाए रखना है। साथ ही, अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति दायित्वों का निर्वहन साहस, विवेक और कानूनसम्मत मर्यादाओं के साथ करना है।

हम जैन हैं - हमारी पहचान अहिंसा है, हमारी शक्ति आत्मसंयम है, हमारी परंपरा सेवा है और हमारा संकल्प आत्मसम्मान के साथ जीना है। हम अहिंसक हैं, असहाय नहीं!



साधु-साध्वी डेटा डिजिटलाइजेशन

अमृत महोत्सव वर्ष में संपूर्ण डेटा फॉर्म भरवाने का राष्ट्रीय लक्ष्य

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा संपूर्ण भारतवर्ष में विराजित पूज्य साधु-साध्वी भगवंतों की संपूर्ण जानकारी को डिजिटल रूप में सुरक्षित एवं व्यवस्थित करने का ऐतिहासिक व भगीरथ कार्य पूर्ण गति के साथ प्रारंभ हो चुका है।

इस दूरदर्शी एवं दूरगामी योजना का मुख्य उद्देश्य पूज्य संयमी आत्माओं के पावन परिचय, संयम-पर्याय, दीक्षा स्थान एवं विस्तृत विवरण का सुव्यवस्थित संग्रह करना है, ताकि जिनशासन की यह अमूल्य निधि भावी पीढ़ियों के लिए सदैव सुरक्षित रह सके और संपूर्ण समाज को निरंतर उनका पावन मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त होता रहे।

अमृत महोत्सव वर्ष में लक्ष्य पूर्ण करने का संकल्प : कॉन्फ्रेंस के केंद्रीय कार्यालय के अनुसार, देशभर के विभिन्न श्री संघों और चातुर्मास स्थलों से पूज्य साधु-साध्वी भगवंतों का डेटा प्राप्त हो रहा है। इस कार्य को अमृत महोत्सव वर्ष के भीतर शत-प्रतिशत पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प लिया गया है, जिससे संपूर्ण भारतवर्ष में विराजित साधु-साध्वी भगवंतों का एक एकीकृत (Unified) डिजिटल डेटाबेस तैयार किया जा सके।

फॉर्म भरने के सरल एवं सुलभ माध्यम : पूज्य गुरुभगवंतों एवं स्थानीय संघों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डेटा फॉर्म भरने हेतु ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों माध्यम उपलब्ध कराए गए हैं।

भौतिक फॉर्म (Hard Copy) : 'साधु-साध्वी डेटा फॉर्म' में संपूर्ण विवरण भरकर डाक, ईमेल अथवा व्हाट्सएप के माध्यम से केंद्रीय कार्यालय को वापस भेजा जा सकता है।

डिजिटल लिंक (Online Portal) : उपलब्ध कराए गए ऑनलाइन फॉर्म लिंक के माध्यम से भी सीधे जानकारी दर्ज की जा सकती है।

समस्त श्री संघों, श्रावकों एवं सवकों से विशेष अपील : जैन कॉन्फ्रेंस समस्त श्री संघों के पदाधिकारियों, युवा शाखा, महिला शाखा तथा समर्पित सदस्यों, श्रावक-श्राविकाओं से सविनय अपील करती है कि - 'अपने-अपने क्षेत्रों में विराजित पूज्य साधु-साध्वी भगवंतों के दर्शन-वंदन के दौरान सेवक या स्थानीय सहयोगी की सहायता से यह फॉर्म भरवाकर यथाशीघ्र प्रेषित कराने में अपना अग्रणी योगदान दें।'

आपकी यह छोटी सी सजगता और सहयोग इस राष्ट्रीय एवं शासन-प्रभावक कार्य को समय-सीमा के भीतर निर्विघ्न पूर्ण कराने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

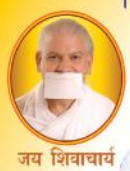
ऑनलाइन भरने के लिए स्कैन करें

फार्म डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें

(पृष्ठ 1 का शेष 'अध्यक्षीय') इस दीपावली पर हम अपने भीतर सद्भाव की ज्योति प्रज्वलित करें और अमृत महोत्सव को धर्मप्रभावना, सामाजिक एकता तथा आध्यात्मिक जागरण का प्रेरक माध्यम बनाएँ। हमारा प्रत्येक प्रयास जैन संस्कृति के शाश्वत मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने और भावी पीढ़ियों के लिए एक सुदृढ़ धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत निर्मित करने की दिशा में समर्पित हो।

आप सभी को दीपावली एवं भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक की हार्दिक मंगलकामनाएँ। प्रभु महावीर की वीतराग वाणी हमारे जीवन को शांति, विवेक और सदाचार से आलोकित करे तथा अमृत महोत्सव समाज में एकता, धर्मनिष्ठा और नवचेतना का संचार करे।

।। श्री महावीराय नमः - श्रमण संघ जयवंत रहे ।। ।। जय आत्म-आनन्द-देवेन्द्र-शिव ।।





श्रमण संघ का अमृत महोत्सव वर्ष

के अन्तर्गत

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक, गुरूदेव

श्री अमर मुनि जी म. सा.

दीक्षा अमृत महोत्सव (75वाँ) के उपलक्ष्य में

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

के तत्वावधान में

शासन सूर्य, भारत केसरी, परम पूज्य वरुण मुनि जी महाराज के मार्गदर्शन में

राष्ट्रीय लेखन प्रतियोगिता

अनुभव आधारित चिंतन द्वारा जीवन और साधना की दिशा में एक सार्थक संवाद

1 वस्तु का स्वभाव ही धर्म है
वस्तु के स्वभाव को समझना ही जीवन, साधना और समता की दिशा है।

2 सामायिक श्रेष्ठ साधना है
समता, जागरूकता और आत्मनिरीक्षण की साधना रूप सामायिक।

3 नवकार श्रेष्ठ महामंत्र है
सभी गुणों को नमन करने वाला, आत्मशुद्धि का आधार, सर्वकालिक महामंत्र।

तीनों विषयों के लिए कुल एक सम्मिलित पुरस्कार राशि

₹ 5,01,000/-

(पाँच लाख एक हजार रुपये मात्र)

कौन भाग ले सकता है?
कोई भी व्यक्ति, जैन - जैनेत्तर, साधु-साध्वी विद्वान, विचारक, शोधकर्ता उत्कृष्ट लेखक, जिन्होंने अपने अनुभव के आधार पर मौलिक चिंतन प्रस्तुत किया हो।

लेखन का स्वरूप
मौलिक, अनुभव आधारित सारगर्भित, जीवन से जुड़ा और व्यवहारिक चिंतन। शैक्षणिक, दार्शनिक आध्यात्मिक या व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित

अंतिम तिथि
31 दिसंबर 2026 तक अपनी प्रविष्टि भेजें।

महत्वपूर्ण बात
यह प्रतियोगिता किसी मत या दृष्टिकोण को अंतिम रूप से स्थापित करने के लिए नहीं है। पुरस्कार का अर्थ यह नहीं होगा कि अन्य लेख गलत हैं। विभिन्न दृष्टियों का स्वागत है।

प्रविष्टि भेजने हेतु : जैन कॉन्फ्रेंस के केन्द्रीय कार्यालय में डाक अथवा ईमेल aissjc1906@gmail.com पर या जैन कॉन्फ्रेंस के अधिकारिक व्हाट्सऐप नंबर 90197 31906, 81306 70524 पर भेजें।

!! अमृत महामहोत्सव - आधार स्तम्भ !!

श्री अतुल जी जैन (दिल्ली)	श्री विजय जी जैन (पानीपत)	श्री नरेश बोहरा जी जैन (मुम्बई)	श्री नरेश आनन्दप्रकाश जी जैन (दिल्ली)
राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस	चेयरमैन - विश्वस्त मण्डल	वाईस चेयरमैन - विश्वस्त मण्डल	ज्ञान प्रकाश योजना - राष्ट्रीय अध्यक्ष

निवेदक - श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति, नई दिल्ली

मुख्य मार्गदर्शक	मुख्य संयोजक	संयोजक	संयोजक	संयोजक	संयोजक	संयोजक	संयोजक
रवीन्द्रनाथ जैन दिल्ली	जसवंत जैन दिल्ली	रमेश मण्डारी जैन इन्दौर	डॉ. अभिताभ जैन बड़ौत	विनय जैन पानीपत	विपुल जैन दिल्ली	संतोष जैन दिल्ली	जीवराज पुनमिया जैन कोल्हापुर

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain



R. Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
सदस्य - विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस
Mob.: 9444204046 E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
vanalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR



M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com



शंका और विश्वास

'बल' अनेक प्रकार का होता है, जैसे - धन-बल, बाहु-बल, सैन्य-बल, सत्ता-बल आदि। इनके अतिरिक्त एक अन्य बल भी होता है, जिसका नाम है - मनोबल अर्थात् आत्मबल! यह बल सभी बलों से बलवान है। सुदृढ़ मनोबल वाले व्यक्ति के लिए संसार में कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

यह स्मरण रखने वाली बात है कि - यह मनोबल 'आत्म-विश्वास' से उत्पन्न होता है। यदि स्वयं पर विश्वास नहीं है, अपने बल के प्रति संदेह है तो व्यक्ति एक छोटी-सी तलैया में भी डूब जाता है।

स्वयं के प्रति विश्वास 'विजय' का मूलमंत्र है। स्वयं के प्रति 'संदेह' पराजय और पतन का द्वार है।

प्रसंग महाभारत का है। कौरवों-पाण्डवों के बीच युद्ध चल रहा था। पराक्रमी योद्धा कर्ण ने शल्य को अपना सारथी चुना। सर्वविदित है कि शल्य ही कर्ण की हार का मुख्य कारण बना। कर्ण का अर्थ है कान और शल्य संदेह या शंका को कहते हैं। सभी शंकायें कान के रास्ते ही मनुष्य के हृदय में प्रवेश करती हैं। यदि कर्ण ने शल्य को और अर्जुन ने कृष्ण को सारथी न बनाया होता तो युद्ध का परिणाम कुछ और होता। कर्ण के साथ सूर्य की शक्ति थी, फिर भी वह हार गया। गलत सारथी के कारण।

शल्य कर्ण को युद्ध-क्षेत्र में बराबर यही कहता रहा - ''ध्यान से लड़ना। सोचकर लड़ना। अर्जुन बहुत निपुण है। उसे जीतना आसान नहीं है। बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।'' दूसरी तरफ अर्जुन जब गाण्डीव छोड़कर बैठ गया तो उसके सारथी ने पूरी गीता कहने में भी संकोच नहीं किया। सिर्फ इसलिए कि अर्जुन लड़े। कर्ण को शल्य मिल गया। यह शंका उसके मन में बनी रही कि वह जीत नहीं पाएगा। एक युद्ध उसके मन में भी चलता रहा। अपने पराक्रम में आस्था और अपनी विजय में संदेह के बीच। कर्ण अपने मन की यह लड़ाई हार गया। इसका असर युद्ध पर पड़ना ही था। उसके शल्य ने उसे युद्ध-सागर में डुबो दिया।

वीर होने का अर्थ बलशाली होना ही नहीं, संकल्प से दृढ़ होना भी है। संदेह केवल संकल्प को ही नहीं तोड़ता, बल और वीरता को भी तोड़ता है। मन के मैदान में होने वाला युद्ध निर्णायक है। इसमें संदेह जीत गया तो हार निश्चित है और विश्वास जीत गया तो जीत होगी ही।

शंका मनुष्य के मन की शांति और संबंधों की मधुरता को नष्ट कर देती है। जहाँ विश्वास होता है, वहाँ प्रेम, सहयोग और अपनापन पनपता है; वहीं निराधार शंका अविश्वास, तनाव और गलतफहमियों को जन्म देती है। शंका के कारण व्यक्ति दूसरों के सद्भावपूर्ण व्यवहार में भी दोष खोजने लगता है। धीरे-धीरे रिश्तों में दूरियाँ बढ़ती हैं और मन अशांत रहने लगता है। शंका निर्णय लेने की क्षमता को भी कमजोर करती है तथा व्यक्ति को नकारात्मक सोच की ओर ले जाती है। जैन दर्शन की दृष्टि से सम्यक् चिंतन और विवेक शंका के समाधान के महत्वपूर्ण साधन हैं। अतः बिना प्रमाण किसी पर संदेह न करें और संवाद व विश्वास से संबंधों को मजबूत बनाएँ।

उत्तराध्ययन सूत्र : युवा पीढ़ी के लिए संदेश

– श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि जी म.



वर्तमान समय में युवा पीढ़ी तेज प्रतिस्पर्धा, तकनीकी आकर्षण, सोशल मीडिया, भौतिकतावाद, मानसिक तनाव और बदलते सामाजिक मूल्यों के बीच जीवन जी रही है। ऐसे वातावरण में सफलता की दौड़ तो बढ़ रही है, लेकिन आत्मसंयम, धैर्य, करुणा और आत्मचिंतन का महत्व कहीं पीछे छूटता जा रहा है। इसी कारण भगवान महावीर स्वामी की शिक्षाएं आज पहले से अधिक प्रासंगिक दिखाई देती हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर ने साधना, विनय, संयम, अनित्यता, आत्मानुशासन और प्रमाद से बचने का संदेश दिया है। यह सूत्र केवल मुनियों के लिए आचार-संहिता नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन को जागरूक, अनुशासित और सार्थक बनाने का मार्गदर्शन है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए इसका संदेश है कि जीवन का वास्तविक विकास बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आत्मविजय, सदाचार और विवेक से होता है।

उत्तराध्ययन सूत्र का प्रसिद्ध संदेश : 'समयं गोयम! मा पमायए', अर्थात् 'हे गौतम! प्रमाद मत करो' – आज के युवाओं को समय, ऊर्जा और अवसरों का सदुपयोग करने की प्रेरणा देता है। प्रमाद का अर्थ केवल आलस्य नहीं, बल्कि अपने कर्तव्यों, चरित्र और जीवन के उद्देश्य के प्रति लापरवाही भी है। इसलिए महावीर स्वामी का संदेश वर्तमान युवा पीढ़ी को जागरूक, संयमी, संवेदनशील और जिम्मेदार बनने की शिक्षा देता है।

आज की युवा पीढ़ी के लिए महावीर का संदेश क्यों आवश्यक? : वर्तमान समय में युवा पीढ़ी अनेक चुनौतियों से गुजर रही है। प्रतिस्पर्धा का दबाव, सोशल मीडिया की चमक, भौतिक सुखों की अंधी दौड़, मानसिक तनाव, क्रोध, असहिष्णुता और रिश्तों में बढ़ती दूरियाँ जीवन को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे दौर में भगवान महावीर की शिक्षाएं युवाओं के लिए केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाला मार्गदर्शन हैं।

1. अहिंसा – केवल व्यवहार नहीं, जीवनशैली : भगवान महावीर ने अहिंसा को सर्वोच्च स्थान दिया। आज जब छोटी-छोटी बातों पर विवाद, कटु भाषा और वैचारिक असहिष्णुता बढ़ रही है, तब युवाओं को यह समझना आवश्यक है कि अहिंसा केवल किसी जीव को शारीरिक कष्ट न देने तक सीमित नहीं है। किसी के प्रति अपमानजनक शब्दों का प्रयोग न करना, दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना और अपने विचारों से किसी को अनावश्यक चोट न पहुँचाना भी अहिंसक जीवन का हिस्सा है। जीवदया और करुणा को अपनाकर युवा एक संवेदनशील समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

2. संयम – सफलता के साथ संस्कार भी जरूरी : आज सफलता को अक्सर धन, पद, लोकप्रियता और उपलब्धियों से मापा जाता है। भगवान महावीर की शिक्षा हमें बताती है कि बाहरी सफलता तभी सार्थक है, जब उसके साथ चरित्र और संयम भी हो। इच्छाओं पर नियंत्रण, समय का सदुपयोग, अनुशासित दिनचर्या और गलत प्रवृत्तियों से दूरी युवाओं को अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सहायता कर सकती है। संयम कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं और व्यवहार पर नियंत्रण रखने की शक्ति है।

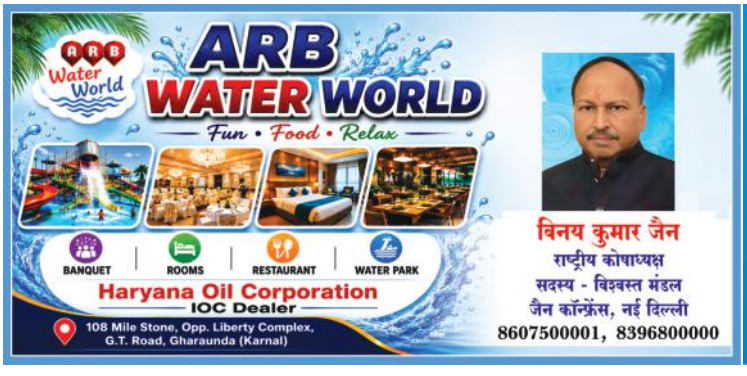
3. अपरिग्रह – जरूरत और लालच के बीच अंतर : उपभोक्तावादी संस्कृति में अधिक से अधिक वस्तुएं जुटाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। दूसरों की जीवनशैली देखकर स्वयं को कमतर समझना भी युवाओं में असंतोष पैदा कर सकता है। भगवान महावीर का अपरिग्रह सिद्धांत सिखाता है कि आवश्यकता और लालच के बीच अंतर समझना चाहिए। संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, सादगी और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता व्यक्ति को आंतरिक संतोष प्रदान करती है। अपरिग्रह का अर्थ प्रगति से दूर होना नहीं, बल्कि प्रगति के साथ विवेक बनाए रखना है।

4. आत्मविजय – सबसे बड़ी जीत स्वयं पर विजय : आज की युवा पीढ़ी जीवन में आगे बढ़ने के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है। लेकिन वास्तविक संघर्ष केवल बाहरी दुनिया में नहीं, अपने भीतर भी होता है। क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार, आलस्य और नकारात्मक सोच पर विजय प्राप्त करना ही आत्मविजय की दिशा है। भगवान महावीर का जीवन युवाओं को प्रेरित करता है कि दूसरों को हराने से पहले अपनी कमजोरियों को पहचानें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें।

5. क्षमा और सहिष्णुता – मजबूत रिश्तों का आधार : परिवार, मित्रता और सामाजिक जीवन में अनेक समस्याएं अहंकार तथा संवाद की कमी से जन्म लेती हैं। महावीर का क्षमा और अनेकांत का संदेश युवाओं को दूसरों के दृष्टिकोण को समझने, मतभेदों के बावजूद सम्मान बनाए रखने और गलतियों को स्वीकार करने की प्रेरणा देता है। विचारों में भिन्नता होना स्वाभाविक है, लेकिन भिन्नता को शत्रुता में बदल देना उचित नहीं। क्षमा संबंधों को बचाने और समाज में एकता बनाए रखने की महत्वपूर्ण शक्ति है।

दीप जलाएं, लेकिन अंतर्मन में भी प्रकाश करें : भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक हमें आत्मचिंतन का अवसर देता है। दीपावली पर घरों और मंदिरों में दीप प्रज्वलित करना श्रद्धा का प्रतीक है, लेकिन इस पर्व की सार्थकता तब और बढ़ जाती है, जब हम अपने भीतर भी परिवर्तन का संकल्प लें। युवा पीढ़ी यदि प्रतिदिन कुछ समय स्वाध्याय, ध्यान, आत्मनिरीक्षण और सद्विचारों के लिए निकाले, तो जीवन में सकारात्मक बदलाव संभव है। दिनभर के व्यवहार पर विचार करना, अपनी भूलों को स्वीकार करना, किसी जरूरतमंद की सहायता करना और किसी जीव को कष्ट न पहुंचाने का प्रयास करना–ये छोटे संकल्प भी महावीर के संदेश को व्यवहार में उतार सकते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित साधना, विनय, अनित्यता और आत्मानुशासन से जुड़े विचार आज भी व्यक्ति को प्रमाद छोड़कर जागरूक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। 'समयं गोयम! मा पमायए' का संदेश प्रत्येक युवा को अपने समय, क्षमता और जीवन के उद्देश्य के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देता है। यदि प्रत्येक युवा प्रतिदिन अपने समय का सदुपयोग करने, अहिंसक भाषा बोलने, क्रोध पर नियंत्रण रखने, अनावश्यक उपभोग से बचने और किसी एक व्यक्ति या जीव के प्रति करुणा दिखाने का संकल्प ले, तो समाज में वास्तविक परिवर्तन की शुरुआत हो सकती है। छोटे-छोटे सद्कर्म ही बड़े चरित्र का निर्माण करते हैं और जागरूक युवा ही राष्ट्र तथा समाज का उज्ज्वल भविष्य बनाते हैं।

भगवान महावीर का संदेश स्पष्ट : पहले स्वयं पर विजय प्राप्त करो, फिर अपने जीवन से संसार में प्रकाश फैलाओ। इस दीपावली पर केवल घरों में दीप न जलाएं, बल्कि अपने भीतर ज्ञान का दीप, करुणा का दीप, संयम का दीप और जिम्मेदारी का दीप भी प्रज्वलित करें। जब हमारे विचार अहिंसक, व्यवहार विनम्र और जीवन अनुशासित होगा, तभी निर्वाण कल्याणक की आराधना सच्चे अर्थों में पूर्ण होगी। यही युवाओं के लिए महावीर का अमर संदेश और आत्मकल्याण की ओर बढ़ने का प्रेरणादायी मार्ग है। सच्ची दीपावली वही है, जब घरों के दीपों के साथ हमारे विचार भी प्रकाशमान हों, व्यवहार अहिंसक बने और जीवन आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़े। यही भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक की सच्ची आराधना और युवा पीढ़ी के लिए उनका अमर संदेश है।





केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से मिला जैन कॉन्फ्रेंस का प्रतिनिधि मंडल

स्मारक सिक्का व डाक टिकट जारी करने की मांग



नई दिल्ली : 22 अक्टूबर 2026 को जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में आयोजित होने वाले 'श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव' वर्ष (1952–2027) की पूर्व तैयारियों के सिलसिले में आज एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने भारत सरकार के केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत से सौहार्दपूर्ण मुलाकात की।

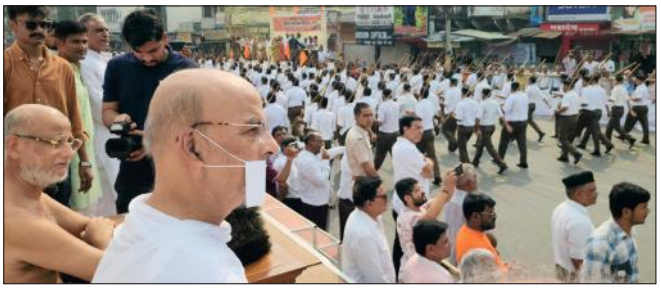
इस महत्वपूर्ण बैठक में प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व स्मृति समिति संयोजक श्री संजय जैन (लाली), राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जय कुमार जैन एवं जीवदया योजना दिल्ली प्रांत अध्यक्ष श्री सुभाष पारख जैन ने किया।

प्रतिनिधि मंडल ने केंद्रीय मंत्री को एक औपचारिक ज्ञापन तथा संघ रत्न उपाध्याय श्री रवींद्र मुनि जी महाराज द्वारा रचित प्रसिद्ध पुस्तक 'सद्भावनाओं का शिलान्यास' भेंट की। इसके साथ ही श्रमण संघ के 1952 में आयोजित ऐतिहासिक सादड़ी सम्मेलन (स्थापना काल) के दुर्लभ चित्रों का संग्रह भी प्रदर्शित किया गया। प्रतिनिधि मंडल ने 75वें अमृत महोत्सव वर्ष (2026-2027) के पावन अवसर पर केंद्र सरकार से श्रमण संघ की ऐतिहासिक एकता 'एक आचार्य, एक समाचारी' और अहिंसा के दर्शन को समर्पित विशेष स्मारक सिक्का एवं डाक टिकट जारी करने का अनुरोध किया।

केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों को ध्यानपूर्वक सुना और श्रमण संघ के 75 वर्षों के सामाजिक, नैतिक और राष्ट्र-निर्माण में दिए गए अतुलनीय योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने मई 2027 तक चलने वाले इस ऐतिहासिक महामहोत्सव के शुभारंभ समारोह में शामिल होने की सहर्ष सहमति जताई और सरकार की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

प्रेषक : श्री संजय जैन (लाली)

परम्पराएँ भिन्न-भिन्न पर भारत की आध्यात्मिक चेतना एक



भीलवाड़ा (राजस्थान) : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विराट पथ संचलन के अवसर पर एक ऐसा अनुपम दृश्य सामने आया, जहाँ विविध आध्यात्मिक परम्पराएँ अपनी-अपनी पहचान और मर्यादा के साथ उपस्थित हुईं। विशेष रूप से श्रमण संघीय युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म., दिगम्बर परम्परा के राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य श्री पुलकसागरजी म. और तेरापंथ से श्री मुनि यशवंत कुमारजी का यह आध्यात्मिक मिलन जैन परम्परा की अलग-अलग धाराएँ एक ही आंतरिक स्रोत पर आकर जुड़ गई।

वेश भिन्न-भिन्न साधना-पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न पर संतत्व की ऊँचाई वहाँ दिखाई देती है, जहाँ भिन्नता दूरी नहीं बनाती, बल्कि सम्मान को और गहरा करती है।

इसी भावभूमि पर अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के संत, गौभक्त एवं राष्ट्रीय चिंतक श्री मनोरथरामजी, महामण्डलेश्वर रामगिरिजी, महामण्डलेश्वर बाबूगिरिजी, सिंधी संत श्री मारामरामजी, संत श्री मोहन शरणजी, हाथी भाटा वाले संतरामजी, रपट के बालाजी से श्री बलरामदासजी, संत जयरामदासजी, इस्कॉन मंदिर, संत श्री बनवारी शरणजी, संत श्री पूरणदासजी, संत श्री लालदासजी, संत श्री रामदासजी, आशुतोषजी तथा सिख पंजाबी समाज से ज्ञानीजी की उपस्थिति ने इस दृश्य को और व्यापक अर्थ दे दिया।

प्रेषक : सुनील चपलोत

प्रभु पार्श्व-पद्मावती की 16 शुक्रवार एकासना आराधना में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, 4000 आराधकों ने लिया भाग



इंदौर (मध्य प्रदेश) : 16 अक्टूबर 2026 संकल्पमय चातुर्मास-2026 के अंतर्गत एयरपोर्ट रोड स्थित नरसिंह वाटिका में प्रभु पार्श्व-पद्मावती 16 शुक्रवार एकासना आराधना श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर साध्वी श्री पद्मकीर्ति म. ने श्रिपाल रास के प्रसंगों का वर्णन करते हुए उसके धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व को समझाया। वहीं साध्वी श्री महाप्रज्ञाजी महाराज साहब ने भक्तिमय भजनों की प्रस्तुति देकर धर्मसभा को भावविभोर कर दिया।

साध्वी श्री पद्मकीर्तिजी म. के मार्गदर्शन में 16 शुक्रवार एकासना आराधना की विधि अत्यंत सुंदर, सहज और सरल तरीके से संपन्न करवाई गई। इस आराधना में कुल लगभग 4000 आराधकों ने सहभागिता की, जिनमें करीब 1000 श्रद्धालु प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहे, जबकि लगभग 3000 आराधक ऑनलाइन माध्यम से जुड़े।

मैलापुर में उमड़ा धर्म, तप और गुरु भक्ति का महासैलाब



(मैलापुर) चेन्नई : 4 अक्टूबर को श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, मैलापुर के तत्वावधान में गुरु श्रुत जन्मोत्सव एवं 45 दिवसीय श्री पार्श्व मेरु जप-तप आराधना का भव्य आयोजन श्रद्धा एवं उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्री श्रुतमुनिजी म. का 46वाँ जन्मोत्सव, श्रमण संघ के युवाचार्य श्री महेंद्र ऋषिजी म. का 60वाँ जन्मोत्सव तथा तप-रत्नाकर श्री अक्षरमुनिजी म. की 34 उपवास की कठिन तपस्या की भावपूर्ण अनुमोदना की।

समारोह में गुरु गणेश संघ समाज-भूषण पुरस्कार श्री किशोरचंद छाजेड़ (सोरापुर) तथा समाज-रत्न पुरस्कार श्री गौतमचंद धोका (यादगिरी) एवं श्री आनंदकुमार बोहरा (के.जी.एफ.) को प्रदान किए गए।

श्री अक्षरमुनिजी म. की तपस्या निमित्त शाल अर्पण का लाभ दीपचंद राहुलकुमार लूनिया परिवार तथा कलश का धर्मलाभ बोहरा परिवार, बेंगलुरु-के.जी.एफ. ने प्राप्त किया।

गुरु भक्ति की अनूठी मिसाल : खवासपुरा में 'मरुधर केसरी मार्ग' का निर्माण



जोधपुर (राजस्थान) : गुरु के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं समर्पण का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए खवासपुरा जिला जोधपुर निवासी कोठारी परिवार ने अपने पैतृक गाँव में लगभग 65-70 लाख रुपये की लागत से गांव के मध्य विशाल सड़क व अन्य मार्गों का नवीनीकरण का निर्माण करवाकर उल्लेखनीय कार्य किया। सेठ श्री मांगीलाल सुगनचंद कोठारी के आशीर्वाद से परिवार के सुरेशचंद, अमरचंद, श्रीपाल, महिपाल, तरुण एवं नमन कोठारी ने इस पुनीत कार्य को साकार किया।

श्रमण सूर्य वरिष्ठ प्रवर्तक मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल म. के प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त करते हुए इस मार्ग का नाम 'मरुधर केसरी मार्ग' रखा गया। श्री सुरेश कोठारी जैन कॉन्फ्रेंस सहित अनेक स्थानों से जुड़ हुए हैं, कोठारी परिवार का यह प्रेरणादायी कार्य गुरु भक्ति के साथ-साथ ग्राम विकास एवं जनसेवा का भी उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रेषक : राजेश चोरड़िया जैन

मुंबई-मेवाड़ भवन में चातुर्मासार्थ विराजित उपाध्याय प्रवर श्री कन्हैयालालजी म. के शिष्य, उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म.सा. 'वागीश' के गुरुभ्राता, तपोकेसरी श्री संजयमुनिजी म. ने अपने जीवन के 31वें वर्षीतप के अंतर्गत 31वें मासखमण के रूप में 32 उपवास की उग्र तपस्या सम्पन्न की। इस अद्भुत तप, त्याग एवं संयममय साधना की अनुमोदना करते हुए श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय परिवार ने तपस्वी संत के श्रीचरणों में सुख साता पुछते हुए कोटि-कोटि वंदन, अभिनंदन एवं अनुमोदना की।



ALDACO
AIM HIGH
Sudarshan Jain
Sadasya Viswast Mandal
National Chairman - Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi
DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com
SS1008 ₹1490/-
SM-4 ₹1325/-
LP-28 ₹875/-
Al-cs-flx-112 ₹1490/-
LP-32 ₹875/-
SM-5 ₹1375/-

जैन संस्कार शिविर में 135 बच्चे ग्रहण कर रहे धर्म एवं संस्कारों की शिक्षा



दुर्ग (छत्तीसगढ़) : वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ, दुर्ग के बैनर तले 18 अक्टूबर से जय आनंद मधुकर रतन भवन, बांधा तालाब, दुर्ग में जैन संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। मानव मिलन संस्थापक, नेपाल केसरी, राष्ट्रसंत डॉ. मणिभद्र मुनि जी महाराज के पावन सान्निध्य तथा पूज्य पुनीत मुनि जी महाराज के प्रेरक मार्गदर्शन में आयोजित इस शिविर में लगभग 135 बच्चे जैन धर्म, धार्मिक संस्कारों एवं नैतिक शिक्षा का अध्ययन कर रहे हैं।

शिविर का मुख्य उद्देश्य बच्चों में बचपन से ही धर्म के प्रति आस्था, संस्कारों के प्रति सम्मान तथा जीवन में सदाचार, अनुशासन, विनम्रता, अहिंसा और करुणा जैसे गुणों का विकास करना है। वर्तमान समय में बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिविर में बच्चों को जैन धर्म के मूल सिद्धांतों, धार्मिक परंपराओं और जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले संस्कारों से परिचित कराया जा रहा है।

शिविर में पूज्य पुनीत मुनि जी महाराज बच्चों को धार्मिक संस्कार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनके प्रेरणादायी मार्गदर्शन में बच्चे धर्म की मूल भावना को समझने के साथ-साथ उसे अपने दैनिक जीवन में अपनाने की प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। सरल एवं सहज तरीके से दी जा रही धार्मिक शिक्षा बच्चों के मन में अच्छे विचारों, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना के बीज रोपित कर रही है। जय आनंद मधुकर रतन पाठशाला की प्राध्यापिका श्रीमती कविता रतन बोहरा, अरुण रतन बोहरा, इंदिरा बोहरा, भूमिका संचेती, चंचल श्रीश्रीमाल, चंदा रूणवाल, मंजु सुराणा, मोनिका चोपड़ा, पायल पारख, रेणुका गोलक्षा, संगीता बाघमार, रिंकी बेगानी, रचिता श्रीश्रीमाल का संस्कार शिविर के संयोजन में उत्कृष्ट योगदान रहा। प्रेषक : नवीन संचेती

प्रवीण ऋषि एवं महेंद्र ऋषि का जन्मोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया



चेन्नई : दक्षिण ज्योति डॉ. आदर्श ज्योति म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीण ऋषि जी म. एवं युवाचार्य पू. श्री महेंद्र ऋषि जी म. का जन्मोत्सव श्रद्धा और उल्लास से मनाया गया।

इस अवसर पर उनके संयम, साधना एवं धर्मप्रभावना का स्मरण करते हुए आदर्शों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम में लगभग 150 दृष्टिबाधित बालिकाओं ने भाग लिया। बालिकाओं ने 14 स्वप्नों की प्रस्तुति एवं भक्ति गीतों से वातावरण भक्तिमय बना दिया। उपस्थितजनों ने मांसाहार त्यागने का संकल्प लिया।

प्रेषक : गौतमचंद गुगलिया जैन

डॉ. श्री सतीश मुनि जी म. प्रवर्तक पद से अलंकृत

सूरत (गुजरात) : जिनशासन व्यवस्था अनुसार श्रमण संघीय व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से गतिमान करने हेतु संघ विकास एवं चतुर्विध संघ की रत्नत्रय आराधना के लिए छत्तीसगढ़ प्रवर्तक श्री रतनमुनि जी म. के स्थान पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की ओर से उप-प्रवर्तक डॉ. सतीश मुनि जी म. को ध्यान योगी, श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. ने श्रमण संघीय 'प्रवर्तक' पद से अंलकृत किया।

तमिलनाडु जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा गुरु दर्शन एवं वंदन यात्रा



चेन्नई (तमिलनाडु) : जैन कॉन्फ्रेंस जोन एक समन्वयक श्री सुरेश लुणावत जैन, प्रांतीय चेयरमैन श्री गौतमचंद कटारिया, प्रांतीय अध्यक्ष श्री धर्मीचंद तालेड़ा, प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संगीता बाठिया एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्यों ने शहर में विराजित पूज्य संत-सतियों के दर्शन-वंदन का लाभ लिया।

इस क्रम में सर्वप्रथम नेहरू बाजार जैन भवन में विराजित वरिष्ठ संत पूज्य श्री वीरेन्द्र मुनि जी म., जैन भवन साहुकारपेट में पू. श्री जयतिलक मुनि जी म., पेरम्बूर जैन स्थानक में पू. श्री राजेश मुनि जी म. ठाणा-2, लक्ष्मी महल में पू. श्री कपिल मुनि जी म. तथा ए.एम.के.एम. परिसर में पू. महासती डॉ. श्री आदर्श ज्योति जी म. ठाणा-3 के दर्शन कर कुशलक्षेम पूछी एवं सार्थक धर्म चर्चा की।

उपप्रवर्तक श्री श्रुतमुनि जी म. ठाणा-4 के दर्शन वंदन प्रवचन का लाभ लिया। श्री देवीचंद बरलोटा की पहल से यह गुरु दर्शन कार्यक्रम संभव हो सका, सभी संघों द्वारा की गई आत्मीय अतिथि सेवा सराहनीय रही।

प्रेषक : धर्मीचंद तालेड़ा जैन

स्मृति शेष श्रद्धांजलि



महासाध्वी पू. श्री सुनीता जी म. का देवलोक गमन

लुधियाना (पंजाब) : श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, ध्यानयोगी आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज की आज्ञानुवर्तिनी, संयम की अपूर्व आराधिका, महासाध्वी श्री राजेश्वरी जी महाराज की पौत्र शिष्या एवं शासन प्रभाविका महासाध्वी श्री सुनीता जी म. का लुधियाना के अस्पताल में देवलोक गमन हो गया। महासाध्वी श्री सुनीता जी महाराज बाजू में उठ रहे दर्द से जूझ रहे थे। उनके उपचार के लिए हर संभव प्रयास किए गए, लेकिन दुर्भाग्यवश वे इस संसार से विदा होकर देवलोक गमन कर गए। उनका देवलोक गमन समस्त जैन समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनके तप, त्याग, संयम, साधना एवं धर्म के प्रति समर्पण को सदैव स्मरण किया जाएगा।। - एस.एस. जैन सभा फरीदकोट



श्री कश्मीरी लाल जैन का स्वर्गवास

दिल्ली : श्री कश्मीरी लाल जैन निवासी कोल्हापुर रोड़, मलकागंज का दिनांक 21 अक्टूबर को स्वर्गवास हो गया। वे दिल्ली जैन महासंघ के महामंत्री रहे तथा जैन कॉन्फ्रेंस में भी सक्रिय रूप से धार्मिक, सामाजिक सेवाएं प्रदान कर चुके है। प्रेषक : सुशील जैन



श्रीमती कमलादेवी कोठारी का निधन

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकारपेट के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ समाजसेवी श्री एम. अजीतराज कोठारी की धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी कोठारी का 4 अक्टूबर को चेन्नई में अचानक हृदयगति रुकने से निधन हो गया। प्रेषक : कोठारी परिवार



सुश्राविका संपत देवी रेडासनी का देवलोकगमन

ब्यावर (राजस्थान) : धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती संपत देवी रेडासनी, धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री हगामीलाल रेडासनी ब्यावर पीह वाले का 11 अक्टूबर को देवलोकगमन हो गया। वे धार्मिक संस्कारों, सरल स्वभाव एवं सेवाभावी व्यक्तित्व के लिए जानी जाती थीं। प्रेषक : विमलचंद रेडासनी

श्रद्धा, संस्कार और संगठन का भव्य संगम



विरार (महाराष्ट्र) : में आयोजित अधिवेशन 2026 में पूज्य गुरुदेव उप-प्रवर्तक पू. श्री सिद्धार्थ मुनि जी म. आदि ठाणा के दर्शन एवं आशीर्वाद तथा अधिवेशन में सहभागिता हेतु सम्पूर्ण भारतवर्ष से लगभग 700-800 से अधिक नवयुवक सदस्य एवं बड़ी संख्या में महिला सदस्य पधारे। चेन्नई से लगभग 60 सदस्यों ने उत्साह एवं उमंग के साथ सहभागिता की। शाखा के वरिष्ठजनों के साथ महिला शाखा की बहनों की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रही। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विरार संघ द्वारा अत्यंत सुंदर, सुव्यवस्थित एवं आत्मीय व्यवस्थाएँ की गई, जो सभी के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय रही।

अधिवेशन में चेन्नई महिला शाखा को वर्षभर के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन एवं विभिन्न सेवा-परियोजनाओं में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह सम्मान चेन्नई की बहनों की निष्ठा, निरंतर सेवा, समर्पण एवं संगठन के प्रति प्रतिबद्धता का गौरवपूर्ण प्रमाण है। गुरुदेव का आशीर्वाद, देशभर के सदस्यों का स्नेहिल मिलन और सेवा-संस्कार की प्रेरणा-अधिवेशन 2026 चेन्नई शाखा के लिए एक अविस्मरणीय एवं गौरवपूर्ण अध्याय बन गया। प्रेषक : प्रवीण चोरड़िया जैन


समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन
देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com
Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनंदप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष - ज्ञान प्रकाश योजना
सदस्य - विश्वस्त मंडल
जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 22-10-2026
Date of Posting : 28/29-10-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 32 ✲ पृष्ठ : 8
माह : अक्टूबर ✲ सप्ताह : 22 अक्टूबर से 28 अक्टूबर

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

जन्म जयन्ती के प्रसंग पर विशेष :

तृतीय आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज : ज्ञान, साधना और समर्पण के प्रतीक



- प्रशांत जैन 'आंधरा'-मुख्य राष्ट्रीय समन्वयक, जैन कॉन्फ्रेंस

जैन श्रमण परंपरा में तृतीय आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का जीवन त्याग, तपस्या, ज्ञान और गुरु-भक्ति की प्रेरणादायी मिसाल है। आपने अल्पायु में संयम-पथ अपनाकर अपना संपूर्ण जीवन धर्म, स्वाध्याय और आध्यात्मिक साधना को समर्पित किया। आपका जन्म 8 नवम्बर 1931 को उदयपुर में हुआ। आपके पिता श्री जीवन सिंह तथा माता श्रीमती तीजकंवर थी। 1 मार्च 1941 को बाड़मेर में आपने पूज्य श्री ताराचंद जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की। आपके आध्यात्मिक जीवन को पूज्य गुरुदेव श्री पुष्कर मुनि जी महाराज का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिसने आपकी साधना और ज्ञानयात्रा को नई दिशा प्रदान की।

दर्शन, साहित्य और इतिहास के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी सहित विभिन्न भाषाओं का अध्ययन आपके व्यापक ज्ञान का परिचायक था। आपने स्वाध्याय को केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि धर्मप्रभावना और समाज के आध्यात्मिक जागरण का माध्यम माना। आपका जीवन इस बात का संदेश देता है कि ज्ञान की सार्थकता विनम्रता, संयम और सदाचार से ही सिद्ध होती है।

15 मई 1992 को आपको आचार्य पद प्राप्त हुआ। वर्ष 1993 में आयोजित चादर महोत्सव आपकी आध्यात्मिक यात्रा का महत्त्वपूर्ण प्रसंग रहा। आचार्य पद के माध्यम से आपने संघ-परंपरा, धार्मिक मर्यादाओं और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति समर्पण का परिचय दिया। सम्पूर्ण भारत में आपका विचरण धर्म प्रभावना और जनमानस में आध्यात्मिक चेतना के विस्तार से जुड़ा रहा। आपका जीवन जैन धर्म के मूल सिद्धांतों - अहिंसा, अपरिग्रह, संयम और आत्मशुद्धि-की प्रेरणा देता है। आज के भौतिकतावादी परिवेश में आपका आदर्श हमें सिखाता है कि जीवन की वास्तविक महानता बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि त्याग, ज्ञान, पवित्र आचरण और आत्मकल्याण की भावना में निहित है।

26 अप्रैल 1999 को मुंबई में आपका स्वर्गारोहण हुआ। आपका भौतिक जीवन भले ही पूर्ण हो गया, लेकिन आपके आदर्श और आध्यात्मिक योगदान आज भी श्रद्धा के साथ स्मरण किए जाते हैं। आपका जीवन इस सत्य को रेखांकित करता है कि महापुरुषों की पहचान उनके जीवनकाल की अवधि से नहीं, बल्कि उनके उद्देश्य, साधना और समाज को दी गई प्रेरणा से होती है।

तृतीय आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम संकल्प लें कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर ज्ञान, संयम, गुरु-भक्ति और सदाचार को अपने आचरण में उतारेंगे। यही उनके प्रति सच्चा सम्मान और उनकी आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाने का सार्थक मार्ग है।

धनतेरस, दीपावली और भगवान महावीर का निर्वाण : आत्मज्योति से विश्व कल्याण का संदेश



- महेन्द्र बोकरिया जैन-राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

भारतीय संस्कृति में धनतेरस और दीपावली केवल उत्सव नहीं, बल्कि जीवन को समृद्ध, प्रकाशमय और मंगलमय बनाने की प्रेरणा देने वाले पर्व हैं। जैन परंपरा में इन पर्वों का विशेष आध्यात्मिक महत्त्व भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से जुड़ा है। कार्तिक अमावस्या की पावन रात्रि में भगवान महावीर ने पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया और संसार को आत्ममुक्ति का शाश्वत संदेश दिया। भगवान महावीर का निर्वाण दीपावली का आध्यात्मिक केंद्र है। मान्यता है कि प्रभु के निर्वाण के पश्चात उनके ज्ञान-प्रकाश की स्मृति में दीप प्रज्वलित किए गए। इस प्रकार दीपावली बाहरी अंधकार को दूर करने के साथ-साथ अज्ञान, मोह, अहंकार और आसक्ति को मिटाकर आत्मज्ञान की ज्योति जगाने का पर्व बन गई।

धनतेरस हमें धन के वास्तविक स्वरूप पर विचार करने की प्रेरणा देता है। भौतिक संपत्ति जीवन की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन सच्चा धन सद्बुद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, संतोष, सदाचार और आध्यात्मिक समृद्धि है। जैन दर्शन का अपरिग्रह सिद्धांत सिखाता है कि संग्रह की असीम लालसा के स्थान पर मर्यादित आवश्यकताओं और परोपकार की भावना को महत्त्व देना चाहिए।

दीपावली का संदेश भी तभी सार्थक है, जब हमारे अंतर्मन में करुणा, क्षमा, मैत्री और अहिंसा का प्रकाश फैले। भगवान महावीर का जियो और जीने दो का संदेश आज के तनावपूर्ण एवं संघर्षपूर्ण वातावरण में पहले से अधिक प्रासंगिक है। यदि हम अपने विचारों को निर्मल, व्यवहार को विनम्र और जीवन को संयमित बना लें, तो प्रत्येक दिन दीपावली बन सकता है। इस पावन अवसर पर हम संकल्प लें कि उत्सवों को केवल बाहरी सजावट और परंपराओं तक सीमित न रखकर आत्मचिंतन, सेवा, सद्भाव और जीवदया का माध्यम बनाएँगे। भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपने आचरण में उतारकर ही हम समाज में शांति और विश्व में सहअस्तित्व की भावना को सुदृढ़ कर सकते हैं।

भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक की पावन स्मृति में यही मंगलकामना है कि ज्ञान का दीप प्रत्येक हृदय में प्रज्वलित हो, अहिंसा प्रत्येक व्यवहार का आधार बने और मानवता का प्रकाश समस्त संसार को आलोकित करें।

दीपावली विशेष :

एक दीया, जो भीतर जले



- जयंतिलाल कुकड़ा जैन-राष्ट्रीय पर्यवेक्षक, जोन-5, जैन कॉन्फ्रेंस

दीपावली पर हम घर-आँगन में असंख्य दीप जलाते हैं। रोशनी से सजे भवन, जगमगाते बाजार और दीपों की कतारें मन को आनंदित करती हैं। लेकिन क्या कभी हमने सोचा है कि इन सबके बीच हमारे अंतर्मन में भी कोई दीया जल रहा है? ऐसा दीया, जो अज्ञान को मिटाए, अहंकार को गलाए और जीवन को करुणा, विवेक तथा सद्भाव से आलोकित कर दे।

वास्तविक दीपावली बाहर नहीं, भीतर घटित होती है। मिट्टी का दीपक अंधकार को दूर करता है, लेकिन आत्मज्ञान का दीप जीवन की दिशा बदल देता है। भगवान महावीर का निर्वाण हमें इसी आंतरिक प्रकाश की अनुभूति कराता है। उनका संदेश था कि आत्मा की शुद्धि, संयम और सम्यक् ज्ञान ही मुक्ति के मार्ग को प्रकाशित करते हैं।

हम दूसरों के दोष देखने में शीघ्रता करते हैं, लेकिन अपने भीतर झाँकने का समय कम निकालते हैं। ईर्ष्या, क्रोध, लोभ और अहंकार हमारे अंतर्मन को अंधकारमय बनाते हैं। यदि इस दीपावली हम क्रोध के स्थान पर क्षमा, घृणा के स्थान पर मैत्री, संग्रह के स्थान पर अपरिग्रह और स्वार्थ के स्थान पर सेवा का दीप जलाएँ, तो हमारा जीवन सचमुच प्रकाशमय हो सकता है।

जैन दर्शन हमें सिखाता है कि अहिंसा केवल किसी जीव को कष्ट न पहुँचाने का नाम नहीं, बल्कि प्रत्येक प्राणी के प्रति संवेदना और सम्मान रखने की जीवन-दृष्टि है। जब हमारी वाणी किसी को पीड़ा न दे, हमारे विचार किसी के प्रति दुर्भावना न रखें और हमारे कर्म किसी जीव के लिए कष्ट का कारण न बनें, तभी भीतर का दीप अपनी सार्थकता सिद्ध करता है।

इस दीपावली केवल घरों को नहीं, अपने हृदय को भी रोशन करें। एक दीप क्षमा का, एक करुणा का, एक सत्य का और एक आत्मचिंतन का जलाएँ। क्योंकि बाहरी रोशनी कुछ समय के लिए रहती है, लेकिन भीतर प्रज्वलित विवेक और सदाचार का प्रकाश जीवनभर हमारा मार्गदर्शन करता है।

इस दीपावली हमारा संकल्प हो-एक दीया ऐसा भी जलाएँ, जो भीतर जले, जो आत्मा को प्रकाशित करे, जीवन को पवित्र बनाए और संसार में प्रेम, अहिंसा तथा मानवता का उजास फैलाए।

कार्तिक वदी 9 - पावन दीक्षा जयंती पर विशेष :

त्याग, तप और संयम की दिव्य ज्योति : पूज्य प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी महाराज



- प्रकाश बुरड़ जैन-कर्नाटक प्रान्तीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

जैन श्रमण परंपरा त्याग, तपस्या और आत्मशुद्धि की अनुपम परंपरा है। दीक्षा इस परंपरा का वह पावन संकल्प है, जिसमें व्यक्ति सांसारिक आकर्षणों से ऊपर उठकर आत्मकल्याण और आध्यात्मिक साधना का मार्ग अपनाता है। पूज्य प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी म. की दीक्षा जयंती इसी महान संयम परंपरा के प्रति श्रद्धा निवेदित करने और उसके आदर्शों को जीवन में उतारने का अवसर है। दीक्षा का वास्तविक संदेश आत्मविजय है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची महानता बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि इच्छाओं पर नियंत्रण, विचारों की निर्मलता और आचरण की पवित्रता में निहित है। जैन दर्शन के अहिंसा, अपरिग्रह, क्षमा और संयम जैसे सिद्धांत आज के जीवन में भी शांति, सहिष्णुता और सद्भाव स्थापित करने की सामर्थ्य रखते हैं।

कार्तिक वदी 9 के इस पावन प्रसंग पर हमारा संकल्प हो कि धर्म को केवल श्रद्धा और उपासना तक सीमित न रखकर अपने व्यवहार का हिस्सा बनाएँ। दूसरों के प्रति करुणा, वाणी में मधुरता, विचारों में उदारता और जीवन में सादगी अपनाकर ही हम आध्यात्मिक मूल्यों को सार्थक कर सकते हैं।

पूज्य प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी महाराज की पावन दीक्षा जयंती पर उनके श्रीचरणों में कोटिशः वंदन। उनकी साधना से प्रेरित होकर आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होना और समाज में धर्म, सदाचार तथा मानवता की ज्योति प्रज्वलित करना ही इस पावन दिवस की सच्ची सार्थकता है।



J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन



चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906